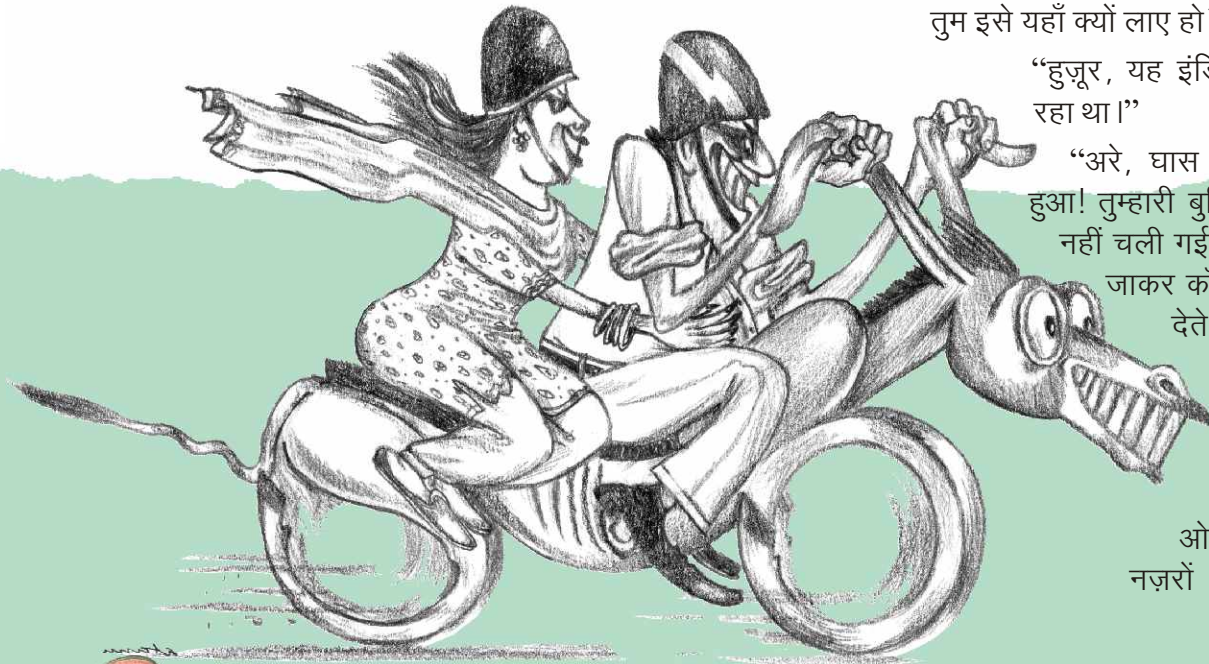




दिल्ली में आने वालों को यह याद रखना चाहिए कि दिल्ली में प्रवेश करने के बहुत-से दरवाज़े हैं। दिल्ली दरवाज़ा, अजमेरी दरवाज़ा, तुर्कमान दरवाज़ा इत्यादि। परन्तु आप दिल्ली में इनमें से किसी दरवाज़े के रास्ते भीतर नहीं आ सकते। क्योंकि इन दरवाज़ों पर अक्सर गाएँ, भैंसें, बैल बैठे रहते हैं या फिर पुलिसवाले चारपाइयाँ बिछाए ऊँघते रहते हैं। हाँ, इन दरवाज़ों के दाएँ-बाएँ बहुत-सी सड़कें बनी हुई हैं, जिन पर चलकर आप दिल्ली में आ सकते हैं। अँग्रेज़ों ने दिल्ली में भी एक इंडिया गेट बनाया है, लेकिन इस गेट से भी गुज़रने का कोई रास्ता नहीं है। दरवाज़े के इर्द-गिर्द घूम-फिरकर जाना पड़ता है। सम्भव है, दिल्ली के घरों में भी थोड़े दिनों में ऐसे दरवाज़े लग जाएँ; फिर लोग खिड़कियों में से कूदकर घरों में प्रवेश किया करेंगे।

दिल्ली में नई दिल्ली है और नई दिल्ली में कनाटप्लेस है। कनाटप्लेस बड़ी सुन्दर जगह है। शाम के समय मैंने देखा कि लोग लोहे के गधों पर सवार होकर इसकी गोल सड़कों पर घूम रहे हैं। यह लोहे का गधा हमसे तेज़ भाग सकता है, लेकिन हमारी तरह आवाज़ नहीं निकाल सकता। यहाँ पर मैंने बहुत से लोगों को भेड़ की खाल के बालों के कपड़े पहने हुए देखा है। औरतें अपने मुँह और नाखून रंगती हैं, और अपने बालों को ऐसे ऊँचा करके बाँधती हैं कि दूर से वे बिलकुल गधे के कान मालूम होते हैं। यानी इन लोगों को गधे बनने का कितना शौक है, यह आज मालूम हुआ।



एक गधे की आत्मकथा

कृश्नचंदर

कनाटप्लेस से टहलता हुआ मैं इंडिया गेट चला गया। यहाँ चारों ओर बड़ी सुन्दर घास बिछी थी और उसकी दूब तो बेहद स्वादिष्ट थी। मैं दो-तीन दिन से भूखा तो था ही, बड़े मज़े से मुँह मार-मारकर चरने लगा। इतने में एक ज़ोर का डण्डा मेरी पीठ पर पड़ा। मैंने घबराकर देखा, एक सिपाही गुस्से में कह रहा था, “यह कमबख्त गधा यहाँ कैसे घुस आया?”

मैंने पलटकर कहा, “क्यों भाई, क्या गधों को नई दिल्ली में आने की मनाही है?”

मुझे बोलता देखकर वह सटपटा गया। शायद उसने आज तक किसी गधे को बोलते नहीं सुना था। फटी-फटी आँखों से मेरी ओर देखने लगा। थोड़ी देर बाद उसका आश्चर्य कुछ कम हुआ, तो मुझे रस्सी से खींचकर थाने ले चला। वहाँ उसने मुझे कान्स्टेबल के सामने जा खड़ा किया।

हैड कान्स्टेबल ने बड़े आश्चर्य से उसकी ओर देखकर कहा, “इसे यहाँ क्यों लाए हो, रामसिंह?”

रामसिंह ने कहा, “हुज़ूर! यह एक गधा है।”

“गधा तो है, यह तो मैं भी देख रहा हूँ, मगर तुम इसे यहाँ क्यों लाए हो?”

“हुज़ूर, यह इंडिया गेट पर घास चर रहा था।”

“अरे, घास चर रहा था तो क्या हुआ! तुम्हारी बुद्धि तो कहीं घस चरने नहीं चली गई? इसे यहाँ क्यों लाए? जाकर काँजी हाउस में बन्द कर देते। इस बेज़बान जानवर को थाने में लाने की क्या ज़रूरत थी।”

रामसिंह ने रुकते-रुकते मेरी ओर टिजागी नज़रों से देखकर कहा,

“हुज़ूर, यह बेज़बान नहीं है, बोलता है!” अब हैड कान्स्टेबल बहुत हैरान हुआ। पहले तो उसे विश्वास न आया। फिर बोला, “रामसिंह, तुम्हारा दिमाग तो ठीक है।”

“नहीं, यह बिलकुल ठीक कहता है, हैड कान्स्टेबल साहिब!” मैंने धीरे-से सिर हिलाकर कहा।

हैड कान्स्टेबल अपनी सीट से उछला, मानो उसने कोई भूत देख लिया हो। वास्तव में उसका आश्चर्य अनुचित भी नहीं था, क्योंकि नई दिल्ली में ऐसे तो बहुत लोग होंगे जो इन्सान होकर गधों की तरह बातें करते हों लेकिन एक ऐसा गधा, जो गधा होकर इन्सानों की-सी बात करे, हैड कान्स्टेबल ने आज तक देखा-सुना न था। इसलिए बेचारा चकरा गया। उसकी समझ में न आया कि क्या करे। आखिर सोच-सोचकर उसने रोजनामचा खोला और रपट दर्ज़ करने लगा।

उसने मुझसे पूछा, “तुम्हारा नाम?”

“गधा।”

“बाप का नाम?”

“गधा।”

“दादा का नाम?”

“गधा।”

“यह क्या बकवास है?” हैड कान्स्टेबल ने गुस्से से कहा, “सबका एक ही नाम है! यह कैसे हो सकता है। अब मुझे देखो, मेरा नाम ज्योतिसिंह है। मेरे बाप का नाम प्यारेलाल था। मेरे दादा का नाम जीवनदास था। हमारे यहाँ नाम बदलते रहते हैं। तुम ज़रूर झूठ बोलते हो?”

ज्योतिसिंह मुझे सन्देह की नज़रों से देखने लगा।

मैंने कहा, “हुज़ूर! मैं झूठ नहीं बोलता, सच कहता हूँ कि हमारे यहाँ नाम नहीं बदलते। जो बाप का नाम होता है, वही बेटे का, वही पोते का।”

“इससे क्या लाभ?” ज्योतिसिंह ने पूछा।

“इससे वंशावली मिलाने में सुविधा होती है। उदाहरण के लिए, क्या आप मुझे अपने परदादा के परदादा का नाम बता सकते हैं?” मैंने ज्योतिसिंह से पूछा।

“नहीं।” ज्योतिसिंह ने अफसोस प्रकट किया।

“मगर मैं बता सकता हूँ। आपके यहाँ वह आदमी बड़ा खानदानी समझा जाता है, जो आज से चार सौ, छह सौ, आठ सौ, सोलह सौ साल पहले के अपने पुरखे का नाम बता सके। देखिए, मैं आपको आज से सोलह सौ क्या, सोलह लाख साल पहले के अपने पुरखे का नाम बता सकता हूँ – श्री गधा! बोलिए, फिर क्या हम गधे आपसे बेहतर खानदान के हुए या नहीं?”

ज्योतिसिंह ने बड़े ध्यान से मेरी ओर देखा। उसका सन्देह और बढ़ गया। उसने धीमे स्वर में रामसिंह के कान में कानाफूसी करते हुए कहा, “मुझे यह शर्ख बड़ा खतरनाक मालूम होता है। हो न हो, यह कोई विदेशी जासूस है, जो गधे के लिबास में नई दिल्ली के चक्कर लगा रहा है!”

रामसिंह ने कहा, “हुज़ूर! मैं तो समझता हूँ इसकी खाल उतरवाकर देखना चाहिए, भीतर से खुफिया जासूस निकल आएगा। फिर हम इसे फौरन गिरफ्तार कर लेंगे।”



सभी चित्र: अतनु राय





ज्योतिसिंह ने कहा, “तुम बिलकुल ठीक कहते हो। लेकिन इसके लिए सब-इंस्पेक्टर चाननराम की आज्ञा लेना बहुत ज़रूरी है। चलो, इसे उनके सामने ले चलें।”

मेरे कान में भी कुछ भनक पड़ गई थी, लेकिन मैं कान लपेटे चुप रहा और उन दोनों के साथ भीतर के कमरे में सब-इंस्पेक्टर चाननराम के सामने चला। चाननराम की मूँछें बिच्छू के डंक की तरह खड़ी थीं और उसका सुर्ख चेहरा हर समय तमतमाया रहता था। चाननराम को आज तक किसी ने हँसते या मुस्कराते हुए नहीं देखा था, इसलिए लोग उसे एक योग्य पुलिस अफसर समझते थे। चाननराम ने उनकी पूरी बात सुनकर मेरी ओर घूरकर देखा और कहा, “हूँ! तो तुम पाकिस्तान के जासूस हो?”

मैं चुप रहा।

चाननराम ने ज़ोर से मेज़ में मुक्का मारकर कहा, “समझ गया, तुम रूस के एजेंट हो।”

मैं फिर भी चुप रहा।

चाननराम ने दाँत पीसते हुए कहा, “कमबख्त! बदमाश! मैं तुम्हारी हड्डी-पसली एक कर दूँगा, वरना जल्दी बताओ तुम कौन हो?”

यह कहकर चाननराम मुझे मुक्कों, लातों और ठोकरों से मारने लगा। मारते-मारते जब वह बिलकुल बेदम हो गया तो मैंने ज़ोर से एक दर्द-भरी आवाज़ की। आवाज़ करते ही वह रुक गया और पहले मेरी ओर आश्चर्य से देखकर और फिर एकदम गुस्से से ज्योतिसिंह और रामसिंह की ओर देखकर बोला, “अरे, यह तो बिलकुल गधा है। और तुम कहते हो, यह कोई विदेशी जासूस है। तुम मुझसे मज़ाक करते हो! मैं अभी तुमको डिसमिस करता हूँ।”

रामसिंह और ज्योतिसिंह दोनों डर से थरथर काँपने लगे। हाथ जोड़कर बोले, “हुजूर! अभी यह बाहर के कमरे में बोल रहा था। साफ-साफ बोल रहा था! बिलकुल इन्सानों की तरह।”

“तुमने सपना देखा होगा या काम करते समय तुम्हारा दिमाग खराब हो गया होगा। जाओ, इस गधे को मेरे सामने से ले जाओ और काँजी-हाउस में बन्द कर दो। अगर तीन-चार दिन में इसका मालिक न आए तो नीलाम कर देना।”

मैं खुशी-खुशी बाहर आया। मेरी चाल काम कर गई। अगर मैं बोलता तो वे लोग निश्चय ही मेरी खाल उधेड़कर देखते कि भीतर कौन है?

इसके बाद तीन-चार दिन तो क्या एक हफ्ते तक कोई मालिक न आया। फिर मुझे नीलाम कर दिया गया। अबके मुझे रामू धोबी ने खरीद लिया जो यमुनापार कृष्णनगर में रहता था।

एक
मक

(एक गधे की आत्मकथा से साभार)

